परिशिष्ट

(अन्वय एवं टिप्पणियाँ)

1. लक्ष्य-वेध-परीक्षा

1-2. **अन्वयः—** प्रहरणज्ञाने जिज्ञासुः पुरुषर्षभः द्रोणः सर्वविद्यास्त्रशिक्षितान् तान् तु सर्वान् समानीय, वृक्षाग्रे, शिल्पिभिः कृतं कृत्रिमं भासं आरोप्य, कुमाराणां अविज्ञातं लक्ष्यभूतं उपादिशत्।

टिप्पणी—प्रहरणज्ञाने जिज्ञासुः = प्रहरणस्य ज्ञाने तस्मिन् जिज्ञासुः (तत्पुरुष समासः) अस्त्र ज्ञान के विषय में जिज्ञासु। **जिज्ञासुः** = जानने की इच्छावाला। **पुरुषर्षभः** = पुरुषेषु ऋषभः (सप्तमी तत्पुरुष समासः) पुरुषों में श्रेष्ठ। **सर्वविद्यास्त्र शिक्षितान्** = सर्वा विद्याः अस्त्राणि च तेषु शिक्षिताः तान् (सप्तमी तत्पुरुषः) सभी विद्याओं एवं अस्त्रों में शिक्षित। **कृत्रिमं भासं** = बनावटी गिद्ध को। **आरोप्य** = रखकर। **अविज्ञातं** = न विज्ञातम् (नञ् तत्पुरुष समासः), अ + वि + ज्ञा + क्त, न जाने गये।

3. **अन्वयः—** (द्रोणोऽकथयत्) भवन्तः सर्वे अपि धनूंषि आदाय एतं भासं समुद्दिश्य संधितेषवः सत्वरा तिष्ठध्वम्।

टिप्पणी—सत्वराः = त्वरया सहिताः, शीघ्रतापूर्वक। **संधितेषवः** = सन्धिताः इषवः यैः ते = धनुष पर बाण चढ़ाये हुए। **तिष्ठध्वम्** = बैठो। **समुद्दिश्य** = सम् + उत् + दिश् + क्त्वा (ल्यप्) लक्ष्य करके।

4. **अन्वयः—** हे पुत्रकाः मद्वाक्यसमकालम् तु अस्य शिरः विनिपात्यताम् एकैकशः नियोक्ष्यामि तथा कुरुत।

टिप्पणी—विनिपात्यताम् = वि + नि + पत् + णिच् + लोट् लकार कर्मवाच्य, गिरा दिया जाय। **एकैकशः** = एक + एकशः वृद्धिसन्धि, एक-एक करके। **नियोक्ष्यामि** = नियुक्त करूँगा।

5. **अन्वयः—** ततः अङ्गिरसां वरः पूर्वं युधिष्ठिरम् उवाच—दुर्धर्षं बाणं सन्धत्स्व, मद्वाक्यान्ते तम् विमुञ्च।

टिप्पणी—अङ्गिरसां वरः = अङ्गिरा वेद-पुराणों में प्रसिद्ध एक ऋषि हुए हैं, उनका गोत्र प्रचलित है; द्रोणाचार्य उसी गोत्र के श्रेष्ठ ऋषि हैं। **दुर्धर्षम्** = जिसे कोई सह न सके। यह बाण का विशेषण है। **संधत्स्व** = (सन् + धा + लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन) साधो। भली-भाँति निशाना बैठाओ।

6. **अन्वयः—**ततः पूर्वं गुरुवाक्य—प्रणोदितः परन्तपः युधिष्ठिरः धनुः गृह्य भासं समुद्दिश्य तस्थौ।

टिप्पणी—गुरुवाक्यप्रणोदितः = गुरोः वाक्यम् गुरुवाक्यं (षष्ठी तत्पुरुष) तेन प्रणोदितः (तृतीया तत्पुरुष) गुरोः वाक्येन प्रणोदितः। गुरु के वाक्य से प्रेरित। **परन्तपः** = शत्रुनाशक। **गृह्य** = गृह् + ल्यप्, पकड़कर, यह पौराणिक प्रयोग है। **समुद्दिश्य** = सम् + उत् + दिश् + ल्यप्। भली प्रकार लक्ष्य करके। **तस्थौ** = स्थित हुए।

7. **अन्वयः—** हे भरतर्षभ! ततः विततधन्वानं तं कुरु नन्दनं मुहूर्त्तात् सः द्रोणः इदं वचनम् उवाच।

टिप्पणी—भरतर्षभ = भरत + ऋषभ, भरत वंश में श्रेष्ठ। **विततधन्वानं** = विततं धनुः येन सः तम् = धनुष को ताने हुए। **कुरुनन्दनम्** = कुरु (वंश) को प्रसन्न करनेवाले। **मुहूर्त्तात्** = थोड़ी देर में। **उवाच** = (वच् + लिट् + प्रथम पुरुष, एकवचन) कहा, बोले।

8. **अन्वयः—**हे नरवरात्मज! त्वम् द्रुमाग्रस्थम् एवं भासं पश्य। युधिष्ठिरः। 'पश्यामि' इति एवम् आचार्यं प्रत्युवाच।

टिप्पणी—नरवरात्मजः = नरेषु वरः नरवरः तस्य आत्मजः (तत्पुरुष समासः) सम्बोधन का रूप, नरों में श्रेष्ठ राजा (ओं) के राजकुमार। **द्रुमाग्रस्थम्** = द्रुमस्य अग्रे तिष्ठति यः तम्। वृक्ष के ऊपर स्थित। **प्रत्युवाच** = प्रति + उवाच (इकोयणचि), उत्तर दिया।

9. **अन्वयः—** सः द्रोणः मुहूर्त्तादिव पुनः प्रत्यभाषत—अथ इमं वृक्षं माम् वा भ्रातॄन् वा अपि प्रपश्यसि।

टिप्पणी—मुहूर्त्तादिव = थोड़ी देर में। **वा** = अथवा। **प्रत्यभाषत** = (प्रति + भाष् + लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) प्रति + अभाषत (यण् सन्धि)। उत्तर में बोले, उत्तर दिया।

10. **अन्वयः—** सः कौन्तेयः तम् इति उवाच (अहम्) एवं वनस्पतिं, भवन्तं च तथा भ्रातॄन् भासं च पुनः पुनः पश्यामि।

टिप्पणी—कौन्तेयः—कुन्त्याः अपत्यं पुमान् = कुन्ती + ढक् (एय), कुन्ती-पुत्र। **भ्रातॄन्** = भ्रातृ शब्द की द्वितीया विभक्ति बहुवचन। **भवन्तम्** = भवान् (आप) सर्वे० द्वितीया विभक्ति एकवचन।

11. **अन्वयः—** अप्रीतमनाः इव द्रोणः 'एतत् लक्ष्यं त्वया वेद्धुम् नैव शक्यम्' इत्येवं कुत्सयन् 'अपसर्प' इति तम् उवाच।

टिप्पणी–अप्रीतमनाः = न प्रीतं मनः यस्य सः (बहुव्रीहिः) जिसका मन प्रसन्न नहीं है वे (द्रोणाचार्य)। **वेद्धुम्** = व्यध् + तुमुन्, बेधने के लिए। **कुत्सयन्** = (कुत्स्-निन्दायाम् + शतृ) दुत्कारते हुए, निन्दा करते हुए। **अपसर्प** = (अप + सृप + लोट् + मध्यम पुरुष, एकवचन) हटो।

12-13 **अन्वयः**–ततः महायशाः जिज्ञासुः (द्रोणः) तेन एव क्रमयोगेन तान् दुर्योधनादीन् धार्तराष्ट्रान् अन्यान् च शिष्यान् भीमादीन्, अन्यदेशजान् राज्ञः च पर्यपृच्छत् तथा च सर्वे 'तत् सर्वम् पश्यामः' इति कुत्सिताः।

टिप्पणी–महायशाः–महद् यशः यस्य सः (बहुव्रीहिः) महान् यशस्वी–शिक्षा एवं परीक्षा के आचार्य प्रमुख–द्रोणाचार्य। **धार्तराष्ट्रान्** = धृतराष्ट्रस्य अपत्यम् पुमान् धार्तराष्ट्रः तान् (द्वितीया विभक्ति, बहुवचन) धृतराष्ट्र के सौ पुत्र, जिनमें ज्येष्ठ दुर्योधन था। **अन्यदेशजान्** = अन्ये देशाः तेषु जाताः इति अन्यदेशजाः तान् द्वितीया विभक्ति, बहुवचन। अन्य देशों में उत्पन्न हुए। **कुत्सिताः** = (कुत्स् + क्तः, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन) निन्दित।

14. **अन्वयः**– ततः स्मयमानः द्रोणः धनञ्जयम् अभ्यभाषत–इदानीं त्वया प्रहर्तव्यम्। एतत् लक्ष्यं विलोक्यताम्।

टिप्पणी–स्मयमानः = (स्मि + शानच्) स्मि धातु का अर्थ मुस्कराना, गर्व करना तथा आश्चर्य करना है। **धनञ्जयम्** = धनम् जयति इति धनञ्जयः (धन + जि + खच् +'मुम्' का आगम) धनञ्जयम् (द्वितीया विभक्ति, एकवचन) अर्जुन को। **प्रहर्तव्यम्** = (प्र + हृ + तव्यत्) 'हृ' से पूर्व 'प्र' उपसर्ग आने पर उसका अर्थ 'मारना' हो जाता है। यहाँ लक्ष्यभेदन का अर्थ है। **एतल्लक्ष्यम्** = एतत् + लक्ष्यम् (तोर्लिः – हल् सन्धि के कारण त् का ल हुआ है) इस लक्ष्य को।

15. **अन्वयः**–एवं उक्तः, गुरुवाक्यप्रणोदितः सव्यसाची मण्डलीकृतकार्मुकः भासं समुद्दिश्य तस्थौ।

टिप्पणी–सव्यसाची–सव्येन वामेन सचति बाणम् इति सव्यसाची = (सव्य + सच् + णिनिः) अर्जुन दाहिने हाथ की भाँति बायें हाथ से भी धनुष पर बाण चढ़ा लेते थे। अर्जुन ने स्वयं कहा है–उभौ मे दक्षिणौपाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे। तेन देव-मनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदुः। **मण्डलीकृतकार्मुकः** = अमण्डलं मण्डलम् कृतम् कार्मुकम् येन सः (बहुव्रीहिः) जिसने अपने धनुष को मण्डलाकार बना रखा है ऐसा (अर्जुन)। **तस्थौ** = (स्था + लिट् + प्रथम पुरुष, एकवचन) ठहर गया, बैठ गया।

16. **अन्वयः**–द्रोणः मुहूर्त्तादिव तं तथैव समभाषत–हे अर्जुन! एनं स्थितं भासं द्रुमं माम् अपि च पश्यसि?

टिप्पणी–तथैव = तथा + एव (वृद्धिरेचि), उसी प्रकार। **समभाषत** = (सम् + भाष् + लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) कहा। **एनं** = इदम् का रूप है। भास के लिए प्रयुक्त दूसरा सर्वनाम 'एनं' प्रयुक्त हुआ है जिसकी द्वितीया विभक्ति एकवचन है। इसको।

17. **अन्वयः**–हे भारत! पार्थः, द्रोणम् 'एकं भासं पश्यामि' इति 'वृक्षं भवन्तं वा तु न पश्यामि' इति च अभ्यभाषत।

टिप्पणी–भारत = भरतस्य गोत्रापत्यं पुमान् इति भारत! सम्बोधन रूप में प्रयुक्त हुआ है। भरतवंश में उत्पन्न। **पार्थः**–पृथायाः अपत्यं पुमान् (पुत्रः), (पृथा + अण्) पृथा (कुन्ती) का पुत्र, अर्जुन। **एकं** = यहाँ एक का अर्थ एकमात्रम्, केवल है। इसके अतिरिक्त अन्य, प्रधान, प्रथम, केवल, सामान्य, समान, बेजोड़ आदि अर्थ भी होते हैं। **अभ्यभाषत** = अभि + अभाषत (इकोयणचि) कहा।

18-19. **अन्वयः**–ततः दुर्धर्षः द्रोणः प्रीतमनाः (सन्) मुहूर्त्तादिव पाण्डवानाम् महारथं तं पुनः प्रत्यभाषत। 'यदि एनं भासं पश्यसि तथा पुनः वचः ब्रूहि।' सः 'भासस्य शिरः पश्यामि न गात्रम्–' इति अब्रवीत्।

टिप्पणी–दुर्धर्षः = दुःखेन धर्षितुम् शक्यः, जो किसी के वश में कठिनाई से हो सके। **प्रीतमनाः** = प्रीतं मनः यस्य सः (बहुव्रीहिः) प्रसन्न मनवाले। **महारथम्** = महान् रथः अस्य (बहुव्रीहिः) जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सके तथा जो अस्त्र-शस्त्र प्रयोग में कुशल हो उसे महारथ कहते हैं। "एको दश सहस्राणि योधयेद् यस्तु धन्विनाम्। अस्त्रशस्त्रप्रवीणश्च महारथ इति स्मृतः।" **प्रत्यभाषत** = प्रति + अभाषत (इकोयणचि)। **अब्रवीत्** = कहा। **यद्येनम्** = यदि + एनम् (इकोयणचि)। यदि इसको।

20. **अन्वयः**– अर्जुनेन तु एवम् हृष्टतनूरुहः द्रोणः पार्थं मुञ्चस्व इति अब्रवीत्। स अविचारयन् मुमोच।

टिप्पणी– अर्जुनेनैवमुक्तस्तु = अर्जुनेन + एवं + उक्तः + तु (वृद्धि + विसर्ग सन्धि)। **हृष्टतनूरुहः** = हृष्टानि तनूरुहाणि यस्य सः (बहुव्रीहिः)। **हृष्टानि** = (हृष् + क्तः + प्रथमा + बहुवचन)। **तनूरुहाणि** = तन्वाम् रोहन्ति इति (रोएँ)। **मुञ्चस्व** = (मुच् + लोट्, मध्यम पुरुष, एकवचन) छोड़ो।

21. **अन्वयः**– ततः पाण्डवः निशितेन क्षुरेण नगस्थस्य तस्य शिरः तरसा उत्कृत्य पातयामास च, द्रोणः हर्षोद्रेकेण तम् पाण्डवम् पर्यष्वजत।

टिप्पणी– पाण्डवः– पाण्डोः अपत्यं पुमान् (पुत्रः), पाण्डु के पुत्र। **निशितेन** = (नि + शी + क्त + तृतीया विभक्ति, एकवचन) (शान पर चढ़ाकर) पैना किया गया, तेज धारदार के द्वारा। **नगस्थस्य** = नगे तिष्ठति इति नगस्थः पेड़ पर स्थित, (नग + स्था +

क = नगस्थ: तस्य) षष्ठी विभक्ति, एकवचन। **तरसा** = झटिति (शीघ्रतावाची अव्यय)। **उत्कृत्य** = (उत् + कृत + ल्यप्) उखाड़ (काट) कर। **पातयामास** = (पत् + प्रेरणार्थक + णिच् = पाति + लिट् + प्रथम पुरुष, एकवचन, गिराया)। **हर्षोद्रेकेण** = हर्ष + उद्रेकेण (आद्गुण:) हर्षस्य उद्रेक: (षष्ठी तत्पुरुष:) उद्रेक: = उत् (द्) + रिच् + घञ्। हर्षातिरेक, हर्ष की अधिकता से। **पर्यष्वजत** = परि + अष्वजत (इकोयणचि), (परि + स्वञ्च + लङ् लकार + प्रथम पुरुष + एकवचन) हृदय से लगा लिया (आलिङ्गन किया)।

2. वृक्षाणां चेतनत्वम्

1. अन्वय:– अमितानाम् महाशब्द: (एभ्य:) भूतानि सम्भवं यान्ति तत: तेषां अयम् महाभूत: शब्द: उपपद्यते।

टिप्पणी–अमितानां = असीमितों के लिए (का) महाशब्द (प्रयुज्यते) महाशब्द प्रयुक्त होता है। **भूतानि** = समस्त प्राणी। **सम्भवं यान्ति** = उत्पन्न होते हैं। **तत:** = उस कारण से। **तेषाम्** = उन पञ्चमहाभूतों का (के लिए)। **अयं** = यह। **उपपद्यते** = सुसंगत होता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश ये पाँचों महाभूत माने जाते हैं।

2. अन्वय:– अत्र चेष्टा, वायु: खम् आकाशम्, ऊष्मा अग्नि:, सलिलम् द्रव: संघात:, पृथिवी च (एवं) शरीरं पाञ्चभौतिकम्।

टिप्पणी– अत्र = यहाँ (इस शरीर में)। **चेष्टा** = गतिशीलता, क्रियाएँ। **खम्** = आकाश, शून्य। **ऊष्मा** = उष्णत्व, गर्मी, अग्नि का रूप। **द्रव:** = तरल पदार्थ। **पदार्था:** = रुधिर आदि तरल पदार्थ। **सलिलम्** = जल। **संघात:** = ठोस। **पाञ्चभौतिकम्** = पञ्च महाभूतोंवाला।

3. पञ्चमहाभूतों के साथ पाँच ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन इस प्रकार किया गया है।

अन्वय:– इति एतै: पञ्चभिर्भूतै: स्थावर-जङ्गम् युक्तम्। श्रोत्रम्, घ्राणम्, रस:, स्पर्श:, दृष्टि: च इन्द्रिय संज्ञिता।

टिप्पणी–इति = इस प्रकार। **एतै:** = इन पञ्चभूतों से। **स्थावरजङ्गमम्** = स्थावराश्च जङ्गमाश्च इति एतेषां समाहार: स्थावरजङ्गमम् (समाहार द्वन्द्व:) चराचर विश्व को। **युक्तम्** = युक्त, मिला हुआ। **श्रोत्रम्** = कर्णेन्द्रिय, कान। **घ्राणम्** = नासिका। **रस:** = रसना (जीभ)। **स्पर्श:** = त्वचा। **दृष्टि:** = चक्षु:, नेत्र। **इन्द्रियसंज्ञिता** = इन्द्रियम् इति संज्ञा अस्ति एषाम् इति इन्द्रि संज्ञीनि तेषां भाव: इन्द्रिय संज्ञिता, इन्द्रियों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

4. स्थावर (जड़) जीवों में पञ्चभूतों के होने में महर्षि भरद्वाज की सन्देहमयी जिज्ञासा इस प्रकार है।

अन्वय:– यदि स्थावर – जङ्गमा: पञ्चभि: भूतै: तु युक्ता: (सन्ति, तर्हि) स्थावराणां शरीरे पञ्चधातव: (किं) न दृश्यन्ते।

टिप्पणी– यदिस्थावरजङ्गमा: = स्थावराश्च जङ्गमाश्च इति स्थावरजङ्गमा: (द्वन्द्व) जड़ तथा चेतन। **स्थावराणाम्** = स्थावरों में। **पञ्चधातव:** = पञ्चतत्त्व। **न दृश्यन्ते** = दिखलायी नहीं देते हैं। **भूतैस्तु** = भूतै: + तु (विसर्ग सन्धि)।

5. वृक्षों में गर्मी एवं गति के अभाव के कारण इनकी पाञ्चभौतिकता सन्दिग्ध है।

अन्वय:– अनूष्माणाम् अचेष्टानाम् घनानाम् च वृक्षाणाम् शरीरे तत्त्वत: पञ्चधातव: न एव उपलभ्यन्ते।

टिप्पणी– अनूष्माणाम् = अविद्यमान: ऊष्मा येषां ते अनूष्माण: तेषां (तत्पुरुष:) गर्मी से रहित वृक्षों के। **अचेष्टानाम्** = क्रियाशीलता हीनों के। **घनानाम्** = खोखलापनरहित (ठोस) वृक्षों के। **तत्त्वत:** = सचमुच। **पञ्चधातव:** = पाँच तत्त्व। **न एव उपलभ्यन्ते** = निश्चित ही नहीं मिलते।

6. वृक्षों में इन्द्रियों के कार्यों का अभाव दिखलायी देता है, अत: भरद्वाज जी उनकी चेतनता पर सन्देह करते हैं।

अन्वय:– ते न शृण्वन्ति न पश्यन्ति न गन्धरससेविन: स्पर्श न विजानन्ति (तत्) कथम् पाञ्चभौतिका: ?

टिप्पणी– ते = वे (वृक्ष), **न शृण्वन्ति** = सुनते नहीं हैं। **न पश्यन्ति** = देखते नहीं हैं। **न गन्धरससेविन:** = गन्धश्च रसश्चेति गन्धरसौ (द्वन्द्व:) तौ सेवन्ते इति। **शीला:** = गन्ध एवं रस का सेवन करनेवाले। **स्पर्शम् न विजानन्ति** = स्पर्श को विशेषत: नहीं जानते। **पाञ्चभौतिका:** = पञ्चभि: भूतै: संसृष्टा: पाञ्चभौतिका:, पाँच भूतों के मेल से बने हुए। **विजानन्ति** = (वि + ज्ञा +लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन) विशिष्ट रूप से नहीं जानते हैं।

7. पञ्चभूतों के अभाव में वृक्षों को कैसे पाञ्चभौतिक कहा जाय? ऐसा सन्देह महर्षि भरद्वाज प्रकट कर रहे हैं–

अन्वय:– वृक्षाणाम् अद्रवत्वात् अनग्नित्वात् अभूमित्वात्, अवायुत: आकाशस्य अप्रमेयत्वात् च (वृक्षाणाम्) भौतिकं नास्ति।

टिप्पणी– अद्रवत्वात् = नास्ति द्रव: येषु ते अद्रवा: (बहुव्रीहि:) तेषाम् भाव: अद्रवत्वम् (पञ्चमीविभक्ति: – तौ पञ्चमी) जलांश

के न होने के कारण। **अनग्नित्वात्** = अग्नि के अंश के अभाव के कारण। **अभूमित्वात्** = भूमि अंश के अभाव के कारण। **अवायुतः** = (अवायुः + तस्-ततसिल्) वायुहीन होने के कारण। **आकाशस्य अप्रमेयत्वात्** = न प्रमेयः अप्रमेयः (नञ् तत्पुरुषः) अमेयस्य भावः अप्रमेयत्वम् तस्मात्। वृक्षों में आकाश ही ज्ञेय नहीं है। **भौतिकता** = पञ्चभूत (तत्त्वों) के मेल से बनना। **नास्ति** = नहीं है।

8. महर्षि भरद्वाज के वृक्षों की भौतिकता के सन्देह का समाधान करते हुए महर्षि भृगु उत्तर देते हैं–

अन्वयः– घनानाम् अपि वृक्षाणाम् आकाशः अस्ति (अत्र) न संशयः। तेषां नित्यं पुष्पफलव्यक्तिः समुपपाद्यते।

टिप्पणी– घनानाम् अपि = ठोस होते हुए भी वृक्षों में। **न संशयः** = सन्देह नहीं है। **तेषाम्** = उन (वृक्षों) का। **पुष्पफलव्यक्तिः** = पुष्पाणि च फलानि च पुष्पफलानि (द्वन्द्वः) तेषां व्यक्तिः (षष्ठी तत्पुरुषः)। **प्रकटीकरणम्** = प्रकट करना। **समुपपाद्यते** = सम्भव है।

9. प्रस्तुत अंश में स्पर्श का होना चित्रित किया गया है।

अन्वयः– ऊष्मतोपर्णम् म्लायते त्वक्फलं पुष्पम् एव चाम्लायते। शीर्यते च अपि तेन अत्र स्पर्शः विद्यते।

टिप्पणी–ऊष्मतो = ताप के कारण। **पर्णम्** = पत्ता। **त्वक्** = चर्म। **म्लायते** = कुम्हला जाता है। **म्लायते** = (म्लै हर्षक्षये लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन)। **शीर्यते** = शृ + लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन) बिखर जाता है। **तेन** = उससे। **अत्र** = वृक्ष में। **स्पर्शः विद्यते** = स्पर्श गुण है, स्पर्श वायु तत्त्व का गुण है, अतः यह स्पष्ट है कि वृक्ष में वायु तत्त्व है क्योंकि बिना स्पर्श का अनुभव किये मुरझाना एवं सूखना सम्भव नहीं।

10. वृक्ष में श्रोत्र इन्द्रिय सिद्ध करने का प्रयास भृगु जी इस प्रकार कर रहे हैं–

अन्वयः– वाय्वग्न्यशनिनिर्घोषैः फलपुष्पमिव शीर्यते। श्रोत्रेण शब्दः गृह्यते तस्मात् पादपाः शृण्वन्ति।

टिप्पणी– वाय्वग्न्यशनिनिर्घोषैः = वायोः अग्नेः अशनीनाम् (विधुतां) निर्घोषाः तैः फलं विशीर्यते = नष्ट हो जाते हैं। **श्रोत्रेण** = श्रवणेन्द्रिय द्वारा। **शब्दः गृह्यते** = शब्द ग्रहण किया जाता है। **पादपाः** = पादप, पेड़-पौधे। **शृण्वन्ति** = सुनते (भी) हैं।

11. वृक्ष देखते भी हैं, इसकी सिद्धि में इस प्रकार कहा जा सकता है–

अन्वयः– वल्ली वृक्षम् वेष्टयते सर्वतः गच्छति च अदृष्टेः च मार्गः न अस्ति तस्मात् पादपाः पश्यन्ति।

टिप्पणी–वल्ली = वल्लरी, लता। **वृक्षं वेष्टयते** = वृक्ष को लपेट लेती है। **सर्वतः** = सब ओर से। **अदृष्टेः** = नास्ति दृष्टिः यस्य सः अदृष्टिः (बहुव्रीहिः) तस्य अदृष्टेः, बिना दृष्टिवाले व्यक्ति को। **मार्गः न अस्ति** = मार्ग नहीं (मिलता) है। **तस्मात्** = इसलिए। **पादपाः पश्यन्ति** = वृक्ष देखते (भी) हैं।

12. वृक्षों का सूँघना इस प्रकार सिद्ध होता है।

अन्वयः– तथा च पुण्यापुण्यैः गन्धैः विविधैः धूपैः अपि पादपाः अरोगाः पुष्पिताः सन्ति तस्मात् पादपाः जिघ्रन्ति।

टिप्पणी– तथा = वैसे (ही)। **पुण्यापुण्यैः** = पुण्याश्च अपुण्याश्चः पुण्यापुण्याः (द्वन्द्व समासः) ते गन्धैः। **विविधैः** = नाना प्रकार की। **धूपैः** = धूप नामक सुगन्धित पदार्थों से। **पुष्पिताः** = पुष्पाणि सञ्जातानि एषाम् (पुष्प + इतच्) फूलों से युक्त हो जाते हैं। **पादपाः** = पौधे। **जिघ्रन्ति** = (घ्रा + लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन) सूँघते हैं। **तस्माज्जिघ्रन्ति** = तस्माद् + जिघ्रन्ति (स्तोश्चुनाश्चुः)।

13. वृक्षों का जल पीना, औषध से नीरोग होना आदि से वृक्षों में रसनेन्द्रिय है, यह सिद्ध होता है।

अन्वयः– पादैः सलिलपानात् च व्याधीनां दर्शनात् च अपि व्याधिप्रतिक्रियत्वात् रसनं विद्यते।

टिप्पणी–पादैः = जड़ों से। **सलिलपानात्** = जल पीने से। **व्याधीनाम्** = रोगों का। **दर्शनात्** = दिखलायी देने से। **व्याधिप्रतिक्रियत्वात्** = व्याधीनाम् प्रतिक्रिया तस्य भावः व्याधिप्रतिक्रियत्वम् तस्मात् व्याधिप्रतिक्रियत्वात् (तत्पुरुषः समासः) रोगों का उपचार होने से। **द्रुमे** = वृक्ष में। **रसनम्** = रसना आस्वादन की इन्द्रिय। **सलिलपानाच्च** = सलिलपानात् + च (स्तोश्चुनाश्चुः)।

14. जड़ से जल पीकर तने तक कैसे पहुँचाते हैं? यह विपरीत-सा लगता है, इस विषय में भृगु जी कहते हैं–

अन्वयः–यथा उत्पलनालेन वक्त्रेण जलं ऊर्ध्वं आददेत् तथा पवन संयुक्तः पादपः पादैः (जलं) पिबति।

टिप्पणी–उत्पलनालेन = उत्पलस्य नालं (षष्ठी तत्पुरुष) तेन उत्पलनालेन = कमलदण्ड से। **वक्त्रेण** = मुख से। **आददेत्** = आ + दद् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन। **पवन संयुक्तः** = वायु समेत। **पादैः** = जड़ों से। **पादपः** = पौधा, पेड़। **वक्त्रेणोत्पलनालेन** = वक्त्रेण + उत्पलनालेन (आद्गुणः)। **यथोर्ध्वम्** = यथा + ऊर्ध्वम् (आद्गुणः)। **संयुक्तः** = (सम् + युज् + क्तः)

15. अन्य प्राणियों की भाँति वृक्ष भी सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं, उनमें भी चेतना शक्ति है।

अन्वय:–सुखदु:खयो: ग्रहणात् छिन्नस्य विरोहणात् च वृक्षाणाम् जीवं पश्यामि (तेषां) अचैतन्यं न विद्यते।

टिप्पणी–सुखदु:खयो: = सुखं च दु:खम् चेति सुखदु:खे तयो: सुखदु:खयो: (द्वन्द्व समास:) सुख और दु:ख के। **ग्रहणात्** = अनुभव करने से। **छिन्नस्य** = कटे हुए के। (छद् + क्त:) **विरोहणात्** = वि + रुह् + ल्युट्। अंकुर आने से। **जीवम् पश्यामि** = जीव (को) देखता हूँ। **अचैतन्यं** = अचेतनता। **न विद्यते** = नहीं है।

16. प्रस्तुत श्लोक में वृक्षों की पाचन-क्रिया के विषय में वर्णन किया गया है।

अन्वय:–तेन आदत्तं तत् जलं अग्निमारुतौ जरयति। आहारपरिणामात् च स्नेह: वृद्धिश्च जायते।

टिप्पणी–तेन = उस (वृक्ष) के द्वारा। **आदत्तम्** = (आ + दा + क्त) ग्रहण किये गये। धातु से पूर्व आ लगाने से धातुज अर्थ विपरीत हो जाता है। जैसे–दा = देना, आ लगने से लेना, गम् = जाना तथा आ लगने से आना आदि। **तज्जलम्** = उस जल (की अग्नि)। अग्निश्च मारुतश्चेति (द्वन्द्व), **अग्निमारुतौ** = अग्नि एवं पवन। **जरयति** = पचवाता है। (जृ + णिच् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन)। यहाँ 'तज्जल' प्रेरक कर्त्ता है। णिच् प्रत्यय लगाने से अर्थ होगा कि वह जल अग्नि एवं पवन को पचाने हेतु प्रेरित करता है। **आहारपरिणामात्** = आहार के पचने से। **स्नेह:** = स्निग्धता, चिकनापन। **वृद्धिश्च जायते** = और बढ़ता है।

17. जैसे अन्य प्राणियों का वध करना पाप है, वैसे ही सजीव वृक्षों का वध करना निषिद्ध है।

अन्वय:–यज्ञादि कारणं बिना एतेषां सर्ववृक्षाणां छेदनम् न कारयेत्। विशेषेण चातुर्मासे नैव कारयेत्।

टिप्पणी–यज्ञादि कारणं विना = यज्ञादि (पवित्र) कारणों के बिना। **छेदनं** = (छि + ल्युट्) काटना। **न कारयेत्** = नहीं कराना चाहिए। **चातुर्मासे** = वर्षा के चार माहों में। **नैव** (न + एव) (निश्चय)–ऐसा नहीं।

18. वृक्ष की पुष्प-समृद्धि से मानव की सराहना की गयी है।

अन्वय:–एकेन अपि पुष्पितेन सुगन्धिना सुवृक्षेण कुलं यथा सर्वं वै वनम् वासितम्।

टिप्पणी–पुष्पितेन = पुष्पाणि संजातानि अस्य पुष्पित: (पुष्प + इतच्) तेन, पुष्पयुक्त। **सुगन्धिना** = शोभन: गन्ध: यस्य स: सुगन्धि: तेन सुगन्धिना, सुन्दर गन्धवाले। **सुपुत्रेण** = शोभनेन पुत्रेण, अच्छे पुत्र के द्वारा। **वासितम्** = सुगन्धितम् भवति इति।

3. सूक्ति-सुधा

1. **अन्वय:**–भाषासु गीर्वाणभारती मुख्या मधुरा (च) तस्मात् हि काव्यं, तस्मात् अपि सुभाषितम् मधुरं अस्ति।

टिप्पणी–गीर्वाणभारती = गीर्वाणा: देवा: तेषां भारती (षष्ठी तत्पुरुष:) संस्कृत भाषा। **मुख्या** = प्रमुख। **मधुरा** = मधुर गुणयुक्त। **दिव्य** = अलौकिक। **सुभाषितम्** = सूक्ति, सुन्दर कथन। **तस्माद्धि** = तस्मात् + हि, निश्चय ही उससे। **तस्मादपि** = तस्मात् + अपि, उससे भी।

2. **अन्वय:**–पृथिव्यां जलम्, अन्नं, सुभाषितम् च त्रीणि रत्नानि, मूढै पाखण्डखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

टिप्पणी–पृथिव्याम् = भूतल पर। **जलमन्नम्** = जलं च अन्नम् च (द्वन्द्व:)। **मूढै:** = विवेक शून्यों के द्वारा। **रत्नसंज्ञा** = रत्नस्य संज्ञा (षष्ठी तत्पुरुष)। **विधीयते** = (वि + धा + कर्मणि + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) किया जाता है।

3. **अन्वय:**–धीमतां काल: काव्यशास्त्रविनोदेन मूर्खाणां च (काल:) व्यसनेन, निद्रया कलहेन वा गच्छति।

टिप्पणी–धीमतां = बुद्धिमानों का। **काव्यशास्त्रविनोदेन** = काव्यं च शास्त्रं च काव्यशास्त्रे (द्वन्द्व:) तयोर्विनोदेन (षष्ठी तत्पुरुष) काव्य तथा शास्त्र विषयक वार्त्ता के द्वारा। **व्यसनेन** = (वि+ अस् + ल्युट्, तृतीया, एकवचन) निन्दनीय कर्मों से। **गच्छति** = (गम् + लट् + प्रथम पुरुष, एकवचन) जाता है, व्यतीत होता है।

4. **अन्वय:**–यत्र साधव: तिष्ठन्ति (तत्र) श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र असाधव: तिष्ठन्ति तत्र लकार: लुप्यते।

टिप्पणी–तिष्ठन्ति = (स्था + लृट् + प्रथम पुरुष + एकवचन) रहते हैं। **श्लोकस्तु** = (श्लोक: तु विसर्ग सन्धि) संस्कृत छन्द। **श्लोकतां** = श्लोक साभाव: तल् ताम्। **श्लोक** = कीर्ति, यश। **श्लोकतां यान्ति** = कीर्ति को प्राप्त होता है। **याति** = (या प्रायणे लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन) प्राप्त होता है। **असाधव:** = न साधव: (नञ् तत्पुरुष) दुर्जन। **तिष्ठन्त्यसाधव:** = तिष्ठन्ति + असाधव: (इकोयणचि)। **लकार** = श्लोक शब्द काल।

5. **अन्वयः**—बृहस्पतिः अपि अप्राप्तकालं वचनम् ब्रुवन् बुद्ध्यवज्ञानम् शाश्वतम् अपमानं च प्राप्नुयात्।

टिप्पणी—बृहस्पतिरपि = बृहस्पतिः + अपि, विसर्ग सन्धि, देवताओं के गुरु भी। **ब्रुवन्** = ब्रू + शतृ = बोलता हुआ। **प्राप्नुयात्** = (प्र + आप् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन) प्राप्त करना चाहिए। **बुद्ध्यवज्ञानम्** = (बुद्धि + अवज्ञानम्-यण् सन्धि) बुद्धि की अवमानना, उपेक्षा। **अवमानम्** = (अव + ज्ञा + ल्युट्)। **शाश्वतम्** = निरन्तर।

6. **अन्वयः**—श्रद्धा समेतस्य विशेषतः पृच्छतश्च वाच्यम् श्रद्धाविहीनस्य अपि प्रोक्तं अरण्यरुदितोपमम्।

टिप्पणी—श्रद्धा = (श्रत् + धा) बड़ों (सम्माननीयों) के प्रति पूज्य बुद्धि। **श्रद्धासमेतस्य** = श्रद्धया समेतः तस्य (तृतीया तत्पुरुषः) श्रद्धा से युक्त का। **पृच्छतश्च** = (पृच्छतः + च विसर्ग सन्धि)। **पृच्छतः** = पृच्छ् + शतृ, प्रथम पुरुष, द्विवचन, पूछनेवाले का। **वाच्यम्** = वच् + ण्यत्, कहा जाना चाहिए। **प्रोक्तम्** = प्र + उक्तम् + गुण सन्धि, कहा गया। **श्रद्धाविहीनस्याप्यरण्यरुदितोपमम्** = श्रद्धाविहीनस्य + अपि = दीर्घ सन्धिः, श्रद्धयाविहीनः तस्य (तृतीया तत्पुरुषः) श्रद्धा से रहित का भी जंगल में रोने के समान व्यर्थ। **अरण्यरुदितोपमम्** = अरण्ये रुदितम् अरुण्यरुदितम् तेन इव उपमा यस्य सः तम् (बहुव्रीहिः)।

7. **अन्वयः**—सरस्वतीवसुमती पतिना बलवता रिपुणा च न नीयते। समविभागहरैः न विभज्यते अपि (च) विबुधबोधबुधैः सेव्यते।

टिप्पणी—वसुमती-पतिना = वसुमत्याः पतिः वसुमतीपतिः तेन (षष्ठी तत्पुरुषः) राजा से। **नीयते** = नी + आत्मनेपद कर्मणिप्रयोग, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन, ले जाया जाता है। **समविभागहरैः** = समं विभागं हरन्तीति समविभागहराः तैः = समान हिस्सा बाँटनेवाले भाइयों द्वारा। **भिज्यते** = वि + भज् + कर्मणि प्रयोग + लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन, बाँटा जाता है। **विबुधबोधबुधैः** = विबुधानाम् बोधः विबुधबोधः (षष्ठी तत्पुरुषः)। तेषां बोधः तैः (षष्ठी तत्पुरुषः)। **सेव्यते** = सेव् + लट् + कर्मणिप्रयोग, आत्मनेपद, प्रथमपुरुष, एकवचन = सेवित होती है।

8. **अन्वयः**—या लक्ष्मीः याचक दुःखहारिणी न (सा न) या विद्या अपि अच्युत भक्तिकारिणी न (सा न) य पुत्रः पण्डित मण्डलाग्रणीः न (स न), सा (लक्ष्मीः लक्ष्मीः) नैव सा (विद्या विद्या) नैव, सः (पुत्रः पुत्रः) नैव।

टिप्पणी—या = यत् स्त्रीलिङ्ग प्रथमा विभक्ति, एकवचन = जो, **याचकदुःखहारिणी** = याचकानाम् दुःखम् (षष्ठी तत्पुरुषः) याचकदुःखम् हरति इति = **याचकः** = याच् + ण्वुल् **याऽप्यच्युतभक्तिकारिणी** = या + अपि (दीर्घ सन्धिः)। अपि + अच्युत = यण् सन्धि, न च्युतः अच्युतः (नञ् तत्पुरुषः) अच्युतस्य भक्तिः = अच्युतभक्तिः (षष्ठी तत्पुरुषः) विष्णु की भक्ति। **नैव** = न + एव, वृद्धि सन्धिः।

9. **अन्वयः**—केयूराः चन्द्रोज्ज्वलाः हाराः स्नानं विलेपनं कुसुमं अलङ्कृता मूर्द्धजाः पुरुषं न भूषयन्ति या संस्कृता वाणी धार्यते (सा एव) एका पुरुषं समलङ्करोति भूषणानि क्षीयन्ते खलुः वाग्भूषणं सततम् भूषणम्।

टिप्पणी—विभूषयन्ति = (वि + भूष् + लट् + प्रथम पुरुष + बहुवचन) सजाते हैं। **चन्द्रोज्ज्वलाः** = चन्द्र + उज्ज्वलाः गुण सन्धि = चन्द्रमा के समान उज्ज्वल। **हाराः** = मोती की मालाएँ। **नालङ्कृताः** = न + अलङ्कृताः दीर्घ सन्धि। **मूर्द्धजाः** = मूर्ध्नि जायन्ते इति (सप्तमी तत्पुरुषः) केश। **वाण्येका** = वाणी + एका (यण् सन्धि) केवल वाणी। **समलङ्करोति** = (सम् + अलं + कृ + लट् लकार + प्रथम पुरुष, एकवचन) शोभा बढ़ाती है। **संस्कृता** = (सम् + कृ + क्तः) सुव्यवस्थित। **धार्यते** = (धृ धारणे कर्मणि प्रयोग, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) धारण की जाती है। **क्षीयन्ते** = (क्षीक्षये कर्मणि प्रयोग, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन) नष्ट हो जाते हैं। **वाग्भूषणम्** = (वाक् + भूषणम्) जश्त्व (व्यञ्जन) सन्धि। वाक्भूषणं इव (कर्मधारयः) वाणीरूपी आभूषण।

4. क्षान्ति-सौख्यम्

1. **अन्वयः**—यः नरः दुर्लभतरम् मानुषं प्राप्य द्विषते, धर्मावमन्ता कामात्मा भवेत् स खलु वञ्चते।

टिप्पणी—दुर्लभतरम् = दुर्लभ-से-दुर्लभ। **मानुषम्** = मनुष्य का जन्म। **प्राप्य** = (प्र + आप् + ल्यप्) पाकर। **द्विषते** = द्वेष करता है। **धर्मावमन्ता** = धर्मस्य अवमन्ता (षष्ठी तत्पुरुष) (अव + मन् + तृच् = अवमन्ता) धर्म का अनादर करनेवाला। **कामात्मा** = कामनाओं में आसक्त रहनेवाला। **वञ्चते** = आत्मानम् वञ्चते, अपने से ही धोखा करता है।

2. **अन्वयः**—सान्त्वेन, अन्न प्रदानेन उत प्रियवादेन च अपि सः सम दुःख सुखः भूत्वा परत्र महीयते।

टिप्पणी—सान्त्वेन = सान्त्वना से, सान्त्वना देकर। **अन्नप्रदानेन** = अन्नस्य प्रदानेन (षष्ठी तत्पुरुषः)। **प्रदानेन** (प्र + दा + ल्युट्) अन्नदान से (भोजन देकर)। **समदुःखसुखः** = सुख-दुःख में समान रहकर। **परत्र** = परलोक में। **महीयते** = प्रतिष्ठा पाता है।

3. **अन्वयः**—आक्रुश्यमानो न आक्रुश्येत् तितिक्षतः मन्युः एनं आक्रोष्टारं निर्दहति तितिक्षतः च सुकृतं (भवति)।

टिप्पणी–आक्रुश्यमानो = (आ + क्रुश् + शानच् (कर्मणि प्रयोग) गाली दिये जाते हुए। **न आक्रुश्येत्** = गाली नहीं देनी चाहिए। **तितिक्षतः** = (तिज् + सन् + शतृ + षष्ठी विभक्ति, एकवचन) क्षमाशील का। **मन्युः** = क्रोध, उचित क्रोध। **एनं आक्रोष्टारम्** (आ + क्रुश् + तृच् + द्वितीया विभक्ति, एकवचन) गाली देनेवाले को। **निर्दहति** = पूर्ण रूप से जला देता है। **सुकृतं** = पुण्य होता है।

4. अन्वयः–सक्तस्य मोहजालविवर्धिनी बुद्धिः चलति मोहजालावृतः इह अमुत्र च दुःखम् अश्नुते।

टिप्पणी–सक्तस्य = (सञ्ज + क्तः) आसक्त की, सांसारिक लगाववाले व्यक्ति की। **मोहजालविवर्धिनी** = मोहरूपी जाल को बढ़ानेवाली। **मोहजालावृतः** = (आ + वृ + क्त) मोहजालैः आवृतः (तृतीया तत्पुरुष समास) मोहरूपी जाल से ढका हुआ व्यक्ति। **इह** = इस लोक में। **अमुत्र** = परलोक में। **दुःखमश्नुते** = दुःख पाता है।

5. अन्वयः–अतिवादान् तितीक्षेत कञ्चन न अभिमन्येत क्रोध्यमानः प्रियं ब्रूयात् आक्रुष्टः कुशलं वदेत्।

टिप्पणी–अतिवादान् = निन्दा अथवा कटु वचनों को। **तितीक्षेत** = सहन करना चाहिए। **कञ्चन** = किसी, कोई (को) (के प्रति)। **न अभिमन्येत** = अहं भाव प्रदर्शित नहीं करना चाहिए। **क्रोध्यमानः** = क्रुध् + णिच् + कर्मणि प्रयोग + शानच्, किसी के द्वारा क्रोध दिलाया जा रहा हो। **आक्रुष्टः** = गाली दिये जाने पर। **कुशलम्** = प्रिय, हितकारी वचन।

6. अन्वयः–एतत् दुःखस्य भैषज्यम् यत् एतद् न अनुचिन्तयेत् हि चिन्त्यमानम् न व्येति भूयः च अपि प्रवर्धते।

टिप्पणी–भैषज्यम् (भिषुज् + ष्यञ्) औषधम्। **हि** = क्योंकि। **चिन्त्यमानम्** = विचार किया जाता हुआ। **न व्येति** = कम नहीं होता है। **भूयश्चापि** = भूयः + च + अपि (स्तोश्चुनाश्चुः, अकः सवर्णे दीर्घः) और फिर भी।

7. अन्वयः–सर्वे निचयाः हि क्षयान्ताः समुच्छ्रयाः पतनान्ताः, संयोगाः विप्रयोगान्ताः जीवितम् मरणान्तम्।

टिप्पणी–हि = निश्चय (से) ही है। **निचयाः** = संग्रहण कार्य। **क्षयान्ताः** = जिनका अन्त क्षय रूप होता है। **समुच्छ्रयाः** = ऊँचाइयाँ, बड़प्पन। **पतनान्ताः** = पतन में, जिनका अन्त पतन में (है)। **संयोगाः** = (सं + युज् + घञ्) मिलन। **विप्रयोगान्ताः** = वियोग में, अन्तवाले। **जीवितम्** = जीवन। **मरणान्तम्** = मरण में, अन्तवाला होता है।

8. अन्वयः–दमः क्षमा धृतिः तेजः सन्तोषः सत्यवादिता, ह्रीः अहिंसा, अव्यसनिता दाक्ष्यम् च इति सुखावहाः।

टिप्पणी–दमः = इन्द्रिय दमन। **सत्यवादिता** = सत्य बोलने का स्वभाव। **ह्रीः** = लज्जा। **अहिंसा** = प्राणियों की हिंसा न करना। **अव्यसनिता** = व्यसन से रहित होना। **दक्षता** = निपुणता। **इति सुखावहाः** = ये सुख देनेवाले गुण हैं।

9. अन्वयः–ये क्रोधं सन्नियच्छन्ति, क्रुद्धान् च संशमयन्ति भूतानाम् च न कुप्यन्ति ते दुर्गाणि अतितरन्ति।

टिप्पणी–सन्नियच्छन्ति = काबू में रखते हैं। **क्रुद्धान्** = (क्रुध् + क्त + द्वितीया विभक्ति, बहुवचन) क्रोधित हुए व्यक्तियों को। **संशमयन्ति** = शान्त करते हैं। **भूतानाम् न कुप्यन्ति** = प्राणियों पर क्रोध नहीं करते।

10. अन्वयः–यस्य भूतेभ्यः अभयं, यतः भूतानाम् अभयम्, देहाद् विमुक्तस्य तस्य कुतश्चन भयं नास्ति।

टिप्पणी–भूतेभ्यः = सभी प्राणियों से। यहाँ भीत्रार्थानाम् भयहेतुः नियम से पञ्चमी विभक्ति है। **यतः** = जिससे। **देहाद्विमुक्तस्य** (वि + मुच् + क्त, षष्ठी विभक्ति, एकवचन) देहाभिमानरहित के, (देह छोड़ने के बाद)। कुतः + चन = कुतश्चन (स्तोश्चुनाश्चुः) कहीं से। **भयं नास्ति** = भयरहित है।

5. विद्यार्थिचर्या

1. अन्वयः–ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत् धर्मार्थौ च अनुचिन्तयेत्, कायक्लेशान् तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थम् एव च (चिन्तयेत्)।

टिप्पणी–धर्मार्थौ = धर्मश्च अर्थश्च = धर्मार्थौ, द्वन्द्व समास, धर्म तथा धन। **अनुचिन्तयेत्** = (अनु + चिन्त् + विधिलिङ् लकार) विचार करना चाहिए। **कायक्लेशान्** = कायस्य क्लेशान् (षष्ठी तत्पुरुष) शरीर के कष्टों को। **तन्मूलान्** = उनके कारणों को। **वेदतत्त्वार्थम्** = वेदस्य तत्त्वम् तस्य अर्थम् = षष्ठी तत्पुरुषः, वेद के तत्त्वार्थ को।

2. अन्वयः– भुक्त्वा स्नानं न आचरेत्, आतुरः न, महानिशि न, वासोभिः सह अजस्रं न अविज्ञाते जलाशये न।

टिप्पणी– भुक्त्वा = (भुज् + क्त्वा) भोजन करके। **आचरेत्** = करना चाहिए। **महानिशि** = महती निट् (निश्) महानिट् तस्यां कर्मधारय समास। **रात्रि** = निश्, निशा, निशि।

3. अन्वयः– कस्यचित् उच्छिष्टम् न दद्यात् च नैव अन्तरा च अद्यात् न, च अस्ति अशनम् एव कुर्यात् क्वचित् च उच्छिष्टः न व्रजेत्।

टिप्पणी–उच्छिष्टम् = (उत् + शिष्टम्) बचा हुआ, जूठा। **अन्तरा** = मध्य में। **अद्यात्** = अद्-भक्षणे + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन = खाना चाहिए। **व्रजेत्** = व्रज + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन।

4. अन्वयः– अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः तस्य आयुः विद्या यशः बलम् (च) इति चत्वारि वर्धन्ते।

टिप्पणी–अभिवादनशीलस्य = अभिवादनम् शीलम् यस्य सः = अभिवादनशीलः तस्य (बहुव्रीहिः), जो प्रणाम करनेवाली प्रवृत्ति का हो, उसका। **वृद्धोपसेविनः** = वृद्ध + उपसेविनः, वृद्धानाम् उपसेवी तस्य (षष्ठी तत्पुरुषः) वृद्धों की सेवा करनेवालों का। **वर्धन्ते** = बढ़ती हैं।

5. अन्वयः – आर्द्रपादः तु भुञ्जीत् आर्द्रपादः तु न संविशेत् आर्द्रपादः तु भुञ्जानः (जनः) दीर्घं आयुः अवाप्नुयात्।

टिप्पणी–आर्द्रपादः = आर्द्रौ पादौ यस्य सः (बहुव्रीहिः) पैर धोकर। **भुञ्जीत्** = (भुज् + विधिलिङ् प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपदी) भोजन करना चाहिए। **संविशेत्** = सोना चाहिए। **भुञ्जानः** = (भुज् + शानच्) भोजन करता हुआ। **अवाप्नुयात्** = (अव + आप् + विधिलिङ्) प्राप्त करना चाहिए।

6. अन्वयः– सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्, सत्यं अप्रियं न ब्रूयात्, प्रियं च अनृतं न ब्रूयात् एषः सनातनधर्मः।

टिप्पणी– ब्रूयात् = (ब्रू + विधिलिङ्) बोलना चाहिए। **अप्रियं** = न प्रियम् अप्रियं, नञ् तत्पुरुष, जो अच्छा न लगे। **अनृतम्** = असत्य।

7. अन्वयः– पाणिपादचपलः न, नेत्र चपलः न, अनृजुः वा वाक्चपलश्च न, परद्रोहकर्मधीः च नैव (स्यात्)।

टिप्पणी– पाणिपादचपलः = पाणी च पादौ च पाणिपादम् (समाहारद्वन्द्वः), तस्मिन् चपलः = हाथ एवं पैर जिसके चपल हों। **नेत्र चपलः** = नेत्राभ्यां चपलः (तृतीया तत्पुरुषः) नेत्र (नेत्रों) से चञ्चल। **अनृजुः** = न ऋजुः (नञ् तत्पुरुष) कुटिल, कठोर। **वाक्चपलः** = वाचा चपलः (तृतीया तत्पुरुषः) वाणी से चञ्चल। **परद्रोहकर्मधीः** = परस्मै द्रोहः = परद्रोह, तस्मिन् कर्माणि धीः यस्य सः (बहुव्रीहिः समास) दूसरों से वैर करनेवाली बुद्धि (धारण करनेवाली)।

8. अन्वयः–सर्वलक्षणहीनः अपि यः नरः सदाचारवान् भवति श्रद्दधानः अनसूयश्च (सः) शतं वर्षाणि जीवति।

टिप्पणी– सर्वलक्षणहीनः = सर्वम् लक्षणम् इति सर्वलक्षणम् (कर्मधारय) तेन हीनः (तृतीया तत्पुरुषः) सभी शुभ लक्षणरहित। **हीनोऽपि** = हीनः + अपि = पूर्वरूप सन्धि।

9. अन्वयः– सर्वं परवशं दुःखं सर्वम् आत्मवशं सुखं एतत् सुखदुःखयोः समासेन लक्षणम् विद्यात्।

टिप्पणी–परवशं = परस्य वशम् इति परवशं (षष्ठी तत्पुरुषः) पराये वश में रहना। **आत्मवशं** = आत्मनः वशं इति आत्मवशं (षष्ठी तत्पुरुषः) अपने वश में। **सुखदुःखयोः** = सुखं च दुःखम् च (द्वन्द्वः) तयोः = सुख एवं दुःख का। **समासेन** = संक्षेप में। **विद्यात्** = विद् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन, जानना चाहिए।

10. अन्वयः– एकाकी नित्यं विविक्ते आत्मनः हितम् चिन्तयेत्। हि एकाकी चिन्तयानः परं श्रेयः अधिगच्छति।

टिप्पणी– विविक्ते = एकान्त में। **चिन्तयेत्** = चिन्त् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन, चिन्तन करना चाहिए। **चिन्तयानः** = (चिन्त् + शानच्) = विचार करता हुआ। **श्रेयः** = मङ्गल। **अधिगच्छति** = अधि + गम् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन, प्राप्त करता है।

6. गीतामृतम्

1. अन्वयः– ते कर्मणि एव अधिकारः फलेषु कदाचन मा, कर्मफलहेतुः मा भूः ते अकर्मणि सङ्गः मा अस्तु।

टिप्पणी– कर्मणि = कर्म करने में। **अधिकारः** = (अधि + कृ + अण्) प्रभुत्व, हक, कब्जा, हुकूमत, विषय (कर्त्तव्य)। **कर्मफलहेतुः** = कर्मणः फलं कर्मफलं तस्य हेतुः (षष्ठी तत्पुरुषः) कर्मफल के निमित्त। **मा भूः** = (मा + भूः + लुङ्, मध्यम पुरुष, एकवचन) मत बनो, न बनो। **अकर्मणि** = न कर्म, अकर्म (नञ् तत्पुरुष) सप्तमी एकवचन। कर्म न करने में। **सङ्गः** = आसक्ति। **कर्मण्येव** = कर्मणि + एव (यण् सन्धि) कर्म में ही। **एवाधिकारः** = एव + अधिकारः (दीर्घ सन्धि)। **अधिकारस्ते** = (अधिकारः + ते, विसर्ग सन्धि)। **सङ्गोऽस्त्वकर्मणि** = सङ्गः + अस्तु (पूर्वरूप सन्धि) + अकर्मणि (यण् सन्धि)।

2. अन्वयः– धनञ्जय! सङ्गं त्यक्त्वा सिद्ध्यसिद्ध्योः समः भूत्वा योगस्थः कर्माणि कुरु समत्वं योग उच्यते।

टिप्पणी–त्यक्त्वा = (त्यज् + क्त्वा) त्यागकर। **सिद्ध्यसिद्ध्योः** = सिद्धिश्च असिद्धिश्च तयोः (द्वन्द्वः) सफलता और असफलता में। **भूत्वा** = (भू + क्त्वा) होकर। **योगस्थः** = योगे स्थितः इति योगस्थः (सप्तमी तत्पुरुषः)। **कुरु** = (कृ + लोट् + मध्यम पुरुष, एकवचन) करो। **उच्यते** = (वच् + भावकर्म में लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) कहा जाता है।

3. अन्वयः– त्वम् नियतं कर्म कुरु, हि अकर्मणः कर्म ज्यायः, अकर्मणः ते शरीर यात्रा अपि न प्रसिद्ध्येत्।

टिप्पणी– ज्यायः = अतिशयेन प्रशस्यम् इस विग्रह में प्रशस्य + ईयसुन्। प्रशस्य का 'ज्य' आदेश तथा ईयसुन् के ईकार का 'आ' आदेश। नपुंसकलिङ्ग एकवचन में ज्यायः। अधिक अच्छा। **शरीरयात्राऽपि** = शरीरस्य यात्रा शरीरयात्रा (षष्ठी तत्पुरुष) यात्रा + अपि (दीर्घ सन्धि) शरीर निर्वाह भी। **ह्यकर्मणः** = हि + अकर्मणः (यण् सन्धि) कर्म न करने से। **प्रसिद्ध्येदकर्मणः** = प्रसिद्ध्येत् + अकर्मणः, प्रसिद्ध्येत् = होना चाहिए।

4. अन्वयः– भारत! कर्मणि सक्ताः अविद्वांसः यथा कुर्वन्ति तथा असक्तः विद्वान् लोकसंग्रहं चिकीर्षुः कुर्यात्।

टिप्पणी– भारत = भरतस्यापत्यं पुमान् (अण् प्रत्यय) भारतः तत्सम्बुद्धौ, हे भारत! = हे अर्जुन! भरत के वंश में उत्पन्न सभी को भारत कहा जाता है। **सक्ताः** = (सच् + क्त + प्रथम पुरुष, बहुवचन) लगे हुए। **अविद्वांसः** = न विद्वांसः (नञ् तत्पुरुषः) मूर्ख, अज्ञानीजन। **कुर्वन्ति** = (कृ + लट् + प्रथम पुरुष, बहुवचन)। **लोकसंग्रहम्** = लोकस्य संग्रहं (षष्ठी तत्पुरुषः) द्वितीया विभक्ति, एकवचन, लोकशिक्षा। **चिकीर्षुः** = कर्तुमिच्छुः (कृ + सन् + उ) करने की इच्छावाला। **कुर्यात्** = (कृत + विधिलिङ् + प्रथम पुरुष, एकवचन) करना चाहिए।

5. अन्वयः– यदृच्छालाभसन्तुष्टः द्वन्द्वातीतः विमत्सरः सिद्धौ असिद्धौ च समः कृत्वा अपि न निबध्यते।

टिप्पणी–यदृच्छालाभसन्तुष्टः = यदृच्छयालाभः यदृच्छालाभस्तेन सन्तुष्टः (तृतीया तत्पुरुषः)। **सन्तुष्टः** = (सम् + तुष् + क्तः) प्रसन्न रहनेवाला। **द्वन्द्वातीतः** = द्वन्द्वम् अतीतः (द्वितीया तत्पुरुषः) हर्ष, शोक, लाभ-हानि द्वन्द्वों से परे। **विमत्सरः** = विगतो मत्सरो यस्मात् इति (बहुव्रीहिः) ईर्ष्यारहित। **सिद्धावसिद्धौ** = सिद्धौ + असिद्धौ (स्वर सन्धि) सफलता और असफलता में। **कृत्वा** = (कृ + क्त्वा) करके। **निबध्यते** = नि + बध् + भाव कर्म में यक् + लट् लकार, आत्मनेपदम्, प्रथम पुरुष, एकवचन, बँधता है।

6. अन्वयः– संयतेन्द्रियः तत्परः श्रद्धावान् ज्ञानं लभते, ज्ञानं लब्ध्वा अचिरेण परां शान्तिम् अधिगच्छति।

टिप्पणी–संयतेन्द्रियः = संयतानि इन्द्रियाणि यस्य सः (बहुव्रीहिः) जितेन्द्रिय। **श्रद्धावान्** = (श्रत् + धा + मतुप्) श्रद्धावाला। **लभते** = (लभ् + लट् + आत्मनेपदं + प्रथम पुरुष, एकवचन) प्राप्त करता है। **लब्ध्वा** = (लभ् + क्त्वा) प्राप्त करके। **अचिरेण** = न चिरेण (नञ् तत्पुरुषः) शीघ्र। **अधिगच्छति** = (अधि + गम् + लट् + प्रथम पुरुष, एकवचन) प्राप्त हो जाता है।

7. अन्वयः– अज्ञः च अश्रद्दधानः च संशयात्मा विनश्यति, संशयात्मा न सुखं न अयं लोकः न परः अस्ति।

टिप्पणी– अज्ञः = न जानातीति अज्ञः (नञ् तत्पुरुषः) (ज्ञा + क प्रत्ययः) मूढ़। **श्रद्दधानः** = (श्रत् + धा + शानच्) श्रद्धा धारण करते हुए। अश्रद्दधानः (नञ् तत्पुरुषः) श्रद्धारहित। **संशयात्मा** = संशये आत्मा यस्य सः (बहुव्रीहिः) संशययुक्त मनवाला। **विनश्यति** = (वि + नश् + लट् लकार + प्रथम पुरुष, एकवचन) नष्ट हो जायगा। **परः** = परलोक।

8. अन्वयः– पाण्डव! यः मत्कर्मकृत् मत्परमः मद्भक्तः सङ्गवर्जितः सर्वभूतेषु निर्वैरः सः माम् एति।

टिप्पणी–पाण्डव! = पाण्डोरपत्यं पुमान् इति (अण् प्रत्यय) तत्सम्बुद्धौ, हे पाण्डव! सङ्गवर्जितः = सङ्गात् वर्जितः, साथ रहित। **सर्वभूतेषु** = सर्वे च भूताः सर्वभूताः तेषु (कर्मधारयः) सभी जीवों में। **निर्वैरः** = निर्गतम् वैरं यस्मात् सः (बहुव्रीहिः) शत्रुतारहित। **एति** = (इण्-गतौ लट् प्रथम पुरुष, एकवचन) प्राप्त करता है।

9. अन्वयः – यः न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। यः शुभाशुभपरित्यागी सः भक्तिमान् मे प्रियः।

टिप्पणी– हृष्यति = (हृष् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) प्रसन्न होता है। **द्वेष्टि** = (द्विष् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) द्वेष करता है। **काङ्क्षति** = (काङ्क्ष + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन) चाहता है। **शुभाशुभपरित्यागी** = शुभं च अशुभं चेति शुभाशुभे (द्वन्द्वः) तयोः परित्यागी = शुभ और अशुभ का त्याग करनेवाला।

10. अन्वयः– यः शत्रौ मित्रे च मानापमानयोः च समः शीतोष्णसुखदुःखेषु समः तथा च सङ्गविवर्जितः (अस्ति स मे प्रियः)।

टिप्पणी– मानापमानयोः = मानश्च अपमानश्च मानापमानौ तयोः (द्वन्द्वः) मान और अपमान में। **शीतोष्णसुखदुःखेषु** = शीतं

च उष्णं च सुखं च दुःखं च इति शीतोष्णसुखदुःखानि तेषु (द्वन्द्वः) शीत-गर्मी, सुख-दुःख इन द्वन्द्वात्मक स्थितियों में। **समः** = समान भाव से रहनेवाला। **विवर्जितः** = (वि + वृज् + क्त) रहित।

11. अन्वय– तुल्यनिन्दास्तुतिः, मौनी, येन केनचित् सन्तुष्टः अनिकेतः स्थिरमतिः भक्तिमान् नरः मे प्रियः (अस्ति)।

टिप्पणी– तुल्यनिन्दास्तुतिः = निन्दा च स्तुतिश्च, निन्दास्तुतिः (ती) (द्वन्द्वः) तुल्ये निन्दास्तुती यस्य सः (बहुव्रीहिः) जिसके लिए निन्दा और स्तुति समान है। **मौनी** = मौनं अस्य-अस्ति इति मौनी, मौन रहनेवाला। **येन** = यत् पुँल्लिङ्ग तृतीया विभक्ति, एकवचन (सर्वनाम)। **सन्तुष्टः** = (सम् + तुष् + क्तः) पूर्ण तृप्त, प्रसन्न। **अनिकेतः** = न निकेतः यस्य सः (बहुव्रीहिः) घररहित, गृहशून्यः। **स्थिरमतिः** = स्थिरा मतिः यस्य सः (बहुव्रीहिः) स्थिर बुद्धिवाली। **भक्तिमान्** = भक्तिवाला, भक्त।

7. जीव्याद् भारतवर्षम्

1. अन्वयः–भारतवर्षम् राष्ट्रम् चिरकालं स्वाधीनं जीव्यात्। सन्मित्रं समृद्धं च भूयात् शत्रु विहीनं जीयात् अरुण किरण मणिमाली हिमगिरिः अस्य मौलेः किरीटः जलधिः कर कल्लोलैः पादान्त प्रक्षाली विलसति, सरितः वक्षसि हाराः विन्ध्यः मेखलामानम् भाति। पल्लव लसिता निबिड वनाली रुचिरं नव परिधानम्। कविकुलम् अस्य मनोरम रूप वर्णने लीनम् आस्ते।

टिप्पणी–चिरकालं = बहुत समय तक। **स्वाधीनं** = स्व + अधीनम् = स्वतन्त्र। **जीव्यात्** = जीवित रहे। **सन्मित्रं** = (सत् + मित्रं) = अच्छे मित्र। **समृद्धम्** = धनवान्। **भूयात्** = हो (ईश्वर करे हो जाय)। **शत्रुविहीनं** = शत्रुरहित होकर। **हिमगिरिरस्य** = हिमगिरिः अस्य (भारतवर्षस्य)। **मौलेः** = सिर का। **अरुण किरणमाली** = अरुणाः ये किरणाः अरुणमालाः अस्य सन्ति इति अरुण किरण मणिमालिन्। माला शब्द से इन् प्रत्यय मालावाला होते हैं = हिमाच्छादित शिखर पर उदीयमान एवं अस्त होते हुए सूर्य की अरुण किरणें ही मानो हिमालयरूपी मुकुट की मणियाँ हैं। **करकल्लोलैः** = कराः कल्लोला इव (उपमित कर्मधारय) कल्लोलरूपी हाथों से, बड़ी लहर से। **पादान्त प्रक्षाली** = पैरों के अग्रभाग को पखारनेवाला। **प्रक्षालन** = धोना-पखारना। **प्रक्षालिन्** = पखारनेवाला (प्र + √ क्षाल् + णिन्) भाति = शोभित होता है। **मेखलामानम्** = मेखला या करधनी की तरह, मानम् का मूल अर्थ नाप-तोल, मेखला के अनुरूप। **लसिता** = शोभित। **पल्लवलसिता** = नवीन पल्लवों से शोभित। **निबिड वनाली** = वनराशि वन का फैलाव। **रुचिरम्** = सुन्दर, रम्य। **नवपरिधानम्** = नवीन वस्त्र। **कवि-कुलम्** = कवियों का समूह। **मनोरम रूप वर्णने** = इसकी मनोरम सुन्दरता का वर्णन करने में। **लीनम् आस्ते** = तल्लीन हैं।

2. अन्वयः–सर्वे-बुध-वर्या ज्ञान-धना (भवन्तु), (सर्वे) रणधीराः मानधना (भवन्तु), सर्वे व्यवसायिधुरीणाः स्वर्णधना (भवन्तु) तथा (सर्वे) वीराः श्रमधना (भवन्तु), (सर्वे) एकीभूय समेताः नव-समाज निर्माणं कुर्वन्तु। पुराणं (धर्म) सम्परिशोध्य मान्यः मानव-धर्मः प्रसरतु। आत्मशक्ति संवलित मानवः नवीनं पाठं पठेत्।

टिप्पणी–सर्वे = सभी। **बुधवर्या** = महान् विद्वान्। **ज्ञानधना** = ज्ञानी पुरुष। **रणधीरा** = युद्ध में धैर्य रखनेवाले। **मानधना** = यशरूपी धनवाले। **व्यवसायिधुरीणाः** = श्रेष्ठ व्यापारी। **स्वर्णधना** = स्वर्णरूपी धनवाले। **श्रमधना** = परिश्रम ही इनका धन है अर्थात् परिश्रम करनेवाले। **एकीभूय** = एक होकर। **समेताः** = एक साथ मिलकर। **सम्परिशोध्य** = सुधरकर। **मान्यः** = सबके मानने योग्य। **मानव-धर्म** = मनुष्य का वह कार्य जिससे सभी का कल्याण हो। **आत्मशक्ति संवलित मानवः** = आत्मा की शक्ति से युक्त मनुष्य। **नवीनं पाठं पठेत्** = नया पाठ पढ़ना या सीखना चाहिए।

3. अन्वयः–पूततरङ्गा, महिमानं प्रथयन्ती प्रवहतु गीता योगक्षेम विधानं कर्ममहत्त्वं गायतु अहिंसा करुणासिक्ता भवेत् तथा वाणी सूनृता (भवेत्) भारत सद्वीराणां कल्याणी गाथा भुवि प्रसरेत्। देशे लोकः स्वस्थः सुखितः (भूयात् कोऽपि) दीनं भावं न भजेत्।

टिप्पणी–पूततरङ्गा = पवित्र लहरोंवाली। **महिमानं प्रथयन्ती** = महिमा को फैलाती है। **प्रवहतु** = बहे (प्र + √वह् + लोट् प्रथम पुरुष, एकवचन)। **योगक्षेम विधानं** = जिसमें योग और क्षेम का विधान है, अप्राप्त की रक्षा करना। **कर्ममहत्त्वं गायतु** = कर्म के महत्त्व का गान करे। **महिमानम्** = महिमन् = महिमा शब्द का द्वितीया एकवचन (महिमा शब्द संस्कृत में पुँल्लिङ्ग होता है)। **करुणासिक्ता** = करुणा से सिंचित। **सूनृता वाणी** = सत्य और प्रिय वाणी। **भारत-सद्वीराणाम्** = भारत के श्रेष्ठ वीरों की। **कल्याणीगाथा** = मङ्गलमयी कहानी। **भुवि** = पृथ्वी पर। **सुखितः** = सुखी-सुख + इत च्। **दीनं भावं न भजेत्** = दीन स्थिति को प्राप्त न हो, दीनता को प्राप्त न हो। **प्रसरेत्** = फैले।

●